Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 5 | ISSUE : 11 | NOVEMBER 2019

समकालीन कवि धूमिल और उनकी काव्य चेतना

डॉ शिवजी चौहान [1]

[1] सहायक प्रध्यापक, हिंदी विभाग, उदासी कालेज, बामुनगाँव, होजाई असम 782446

ABSTRACT:

KEYWORDS:

'समकालीन' शब्द का शाब्दिक अर्थ है – हाल फिलहाल। यदि हम समकालीन कविता संज्ञा के परिप्रेक्ष में 'समकालीन' शब्द का शाब्दिक अर्थ लगाये तो सीधा अर्थ निकले गा- हाल फिलहाल की कविता। जिस प्रकार हिंदी में नई कविता संज्ञा का प्रयोग एक विशेष प्रकार की मानसिकता को संकेतित करने के लिए एक विशेष दौर को लिखी जाने वाली कविताओं के लिए किया गया है, ठीक उसी प्रकार समकालीन कविता संज्ञा का प्रयोग एक विशेष दौर में लिखी जाने वाली कविताओं के अर्थ में रूढ़ हो गया है। आधुनिक काल की उपकाल खंड को जाने बिना समकालीन कविता का अर्थ स्पष्ट करना टेढ़ी खीर है, क्योंकि भक्तिकाल या रीतिकाल उस (तत्कालीन) समय समकालीन ही था। असल में समकालीन कविता आधुनिक युग का काव्यांदोलन का सूचक नाम है। आधनिक हिंदी कविता के इतिहास में 1970 ई. के बाद की कविता को समकालीन कविता के नाम से जाना जाता है। समकालीन कविता के प्रणेता धूमिल है। 'स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य का इतिहास' में डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय का मानना है – "आधुनिकतम कविता अर्थात् 1970 से 1980 कत की कविता वास्तविक जीवनानुभव की कविता है। इसका एक (हो सकता है अभी और नाम दिए जाएँ) नामकरण हो भी गया है – समकालीन कविता। अब समकालीनता बोध आधुनिकता बोध से भिन्न रुप में माने जाने की चेष्टा हो रही है और यह कहा जा रहा है कि समकालीन कविता परिवर्तित हुए जीवन की यथार्थता को उजागर करने के लिए नये प्रतिमानों का आश्रय ग्रहण कर रही है। ... समकालीन कविता के कवि नई कविता से संबद्ध थे। अब उन्होंने अपना झंडा अलग गाड़ लिया है और कहते हैं कि नई कविता के कवि क्षणवादी थे। उनका आदमी पहचाना नहीं जा सकता था, समकालीन कविता का आदमी सहज ही पहचाना जा सकता है। धूमिल इस आंदोलन के मसीहा माने जाते हैं।"[i] समकालिन कविता की आधारभूमि मुख्य रुप से युग परिवेश और उसके जीवन के साथ जुड़े हुए विवसतापूर्ण सवाल है। 1970 ई. के बाद की समस्या प्रत्येक जागरुक कवि की चेतना को झकझोर दिया। चाहे देश की आपातकाल लागु होने या सांप्रदायिक विद्वेश, दंगे फसाद और आतंकवाद, किसानों की आत्महत्याएँ, बड़ी राजनैतिक पार्टीयों का टूटना, नेताओं की झूठी प्रलोभन चाहे यह कहे राजनीति और अपराध का गठबंधन होना, मीडिया और सत्ता का गठबंधन आदि घटना समकालीन कविता का अधार बना।

आजादि के बाद के समय में मोहभंग का केंद्रीय कारण भारतीय राजनीतिक में स्वार्थी राजनेताओं का प्रवेश है। जनसेवा के नाम पर जनता को इन लोगों से अत्यंत नुकसान हुआ। इसका पर्दाफास कौन करेगा। राजनेताओं के छत्रछाया में सरकारी अधिरारी और कर्मचारी में व्याप्त भ्रष्टाचार को कौन रोकेगा। यही कारण है कि शुदामा पंडेय धूमिल छटपटा जाते हैं और लिखते हैं –

"एक आदमी
रोटी बेलता है
एक आदमी रोटी खाता है
एक तीसरा आदमी भी है
जो न रोटी बेलता है ,न रोटी खाता है।
वह सिर्फ़ रोटी से खेलता है
मै पूछता हूँ -
यह तीसरा आदमी कौन है ?
मेरे देश की संसद मौन है।"[ii]

आजादी से पहले भारतीय नेताओं ने अनेक वादे कर चुके थे जिलके चलते आजादी के पश्चात, देश की समृधि तथा आम जनता के हित के लिए लोगो ने कुछ सपने पाल रखे थे। लेकिन आजादी के बाद तत्कालीन सरकार उसी रंग में रंगी पायी गई, जिसे तोड़ने के लिए लोगों ने अंग्रेजो से लड़ाईयाँ लड़ी थी। अब अपनी ही सरकार कभी क्षेत्रीय हित, साम्प्रदायिकता, तो कभी धर्म, भाषा, सुरक्षा के नाम पर लोगों का शोषण और दमन कर रही थी। ऐसी स्थिति में धूमिल कैसे चुप बैठते। उन्होंने अपनी कविता के माध्यम से व्यवस्था के शोषण चक्र को उजागर किया और लोगो को नया सोचने समझने तथा विचारयुक्त होकर सामाजिक विसंगतियों को दूर करने की प्रेरणा दी। 'बीस साल बाद' नामक कविता

में कवि लिखा है –

अपने आप से सवाल करता हूँ -
क्या आजादी सिर्फ तीन थके हुए रंगों का नाम है
जिन्हें एक पहिया ढोता है
या इसका कोई खास मतलब होता है ।

धूमिल का कवि ह्रदय, लोकमानस के तकलीफों व दर्द को दूर करने के लिए प्रयासरत है, इसीलिए वे कविता को हथियार के रूप में प्रयोग करते है । धूमिल उस पूंजीवादी एवं सामंतवादी व्यवस्था के विरोध में है, जो स्वाधीनता के बाद भी आमजनता को उसके अधिकार से वंचित किए है, लेकिन गरीब इस व्यवस्था की चालाकी को समझ नही पाता। न केवल कविता में बल्कि विभिन्न गद्य साहित्य विधाओं में भी यह स्वर देखने को मिल जाता है । 26 जनवरी, 2008 ई. को दिल्ली में नामवर सिंह और राजेन्द्र यादव के बिच 'जिसे तुम सपना कहते हो उसे मैं विकल्प कहता हूँ' नामक विषय पर हुई बातचीत में नामवर सिंह ने धूमिल की ही तरह कहते हैं – "जिसे तुम सपना कहते हो उसे मैं विकल्प कहता हूँ क्योंकि आज जिस मंजिल पर देश पहूँचा है, उसमें लगभग यह महसूस हो रहा है कि कोई विकल्प नहीं है ।"[iii] धूमिल की कविता में व्यवस्थ के प्रति विक्षोभ और आक्रोश है । उनकी कविता जनतंत्र, संसद, संविधान और प्रजातंत्र के खोखलेपन को उभारता है । इनकी कविता में जनतंत्र, संसद, जनता, आदमी, भाषा और आजादी शव्द का प्रयोग सबसे अधिक हुआ है ।

पिछड़े हुए लोगों और कमज़ोर वर्गों के शोषण और भ्रष्टाचार के बोलबाले से भारत में आर्थिक असंतुलन पैदा हो गया है। धनी और धनी तथा गरीब और गरीब होता जा रहा है। इस आर्थिक विषमता के प्रति जागरूक रहना आवश्यक है। कई पीढ़ियों से लगातार सब प्रकार के शोषण का शिकार हो रहे हाशियाकृत समाजों जैसे, दलित, नारी और अल्पसंख्यकों के मानवाधिकारों, सामाजिक न्याय, पहचान तथा अस्तित्व के लिए संघर्ष करना आवश्यक है। क्योंकि कवि धूमिल आजादी के बाद से इंतजार करते आया है पर न शिक्षा न अर्थिक न समाजिक न राजनीति कुछ भी नहीं बदला । कवि पटकथा में उस दुख का अभिव्यक्त किया है जो इस प्रकार है–

मैंने इंतजार किया
अब कोई बच्चा
भूखा रहकर स्कूल नहीं जाएगा
अब कोई छत बारिश में
नहीं टपकेगी ।
अब कोई आदमी कपड़ों की लाचारी में
अपना नंगा चेहरा नहीं पहनेगा
अब कोई दवा के अभाव में
घुट-घुटकर नहीं मरेगा
अब कोई किसी की रोटी नहीं छीनेगा
कोई किसी को नंगा नहीं करेगा
अब यह जमीन अपनी है
आसमान अपना है
जैसे पहले हुआ करता था ।

धनबल से संचालित, आत्मकेंद्रित, सुविधाभोगी व्यक्ति को परिवार के महत्व तथा उसके टूटने से उत्पन्न भयंकर परिणामों से अवगत कराकर 'घर' की पुनः खोज करना आवश्यक है। युद्धों और विज्ञान के नए अविष्कारों के प्रदूषण से मानवता को बचाने के लिए प्रकृति और उसके तत्वों को काव्यवस्तु के रूप में ग्रहण करना आवश्यक है। धूमिल ने गाँव नामक कविता में ग्रामीण परिवेश का यथार्थ चित्र उभारा है, जिसमें परिवेश की करूणा साकार की गयी है, क्योंकि उस गाँव में दुख और अवसाद के सिवा और कुछ नहीं है । धूमिल ने बनारस के आस पास के किसी अभावग्रस्त गाँव का वर्णन करते हुए लिखते हैं –

"मूत और गोबर की सारी गंध उठाये
हवा बैल के सूजे कंधे से टकराये
खाल उतारी हुई भेड़ सी
पसरी छाया नीम पेड़ की ।
डाँय-डाँय करते डाँगर के सींगों में आकाश फँसा है ।"[iv]

भारत कृषिप्रधान देश है । किसान गाँवों में रहते हैं, आज गाँव का स्थिति बद से बदतर होते जा रहा है- रहने के लिए घर, पीने की पानी और जाने आने के लिए रास्ता का जो स्थिति है वह असह्य है । आजाद भारत का सही तस्वीर गाँव में ही देखा जा सकता है। आज आजाद भारत का वह गाँव सही रूप में इसका दूसरा ही नक्सा प्रस्तुत करता है। फूटी हुइ छत, टूटे हुइ छप्पर, बूढ़ा बैल के साथ-साथ लाचारी, भुखमरी, बेकारी का यथार्थ रूप सायद ही कही देखा जा सकता है । धूमिल ने इन्हीं तथ्यों को प्रस्तुत किया है । डॉ. श्रीनिवास पांडेय ने 'छायावादोत्तर काव्य-संग्रह' में नई कविता से संदर्भ में धूमिल की चर्चा करते हुए कहते हैं – "नयी कविता का विषय क्षेत्र अपने आरंभिक दौर में मुख्यत शहरी परिवेश व मध्यवर्ग की बाह्य समस्याओं व आंतरिक जटिलताओं तक ही सीमित था, परंतु परवर्ती काल में ग्रामीण परिवेश व सामान्य जन के दुख दर्द को भी प्रचुर मात्रा में चित्रित किया गया । इस दृष्टि से धूमिल के प्रसिद्ध काव्य संग्रह 'संसद से सड़क तक' (सन् 1972 इ.) का प्रकाशन एक युगान्तकारी मोड़ सिद्ध हेता है । इसने न केवल अपनी परवर्ती पीढ़ी के कवियों को प्रभावित किया अपितु पूर्ववर्ती पीढ़ी के कवियों ने भी इस कवि से पर्याप्त प्रेरणा व दिशा प्राप्त की ।"[v] सन् 1975 ई. के बाद की कविता में आक्रोश का उफान विक्षोभ में बदलता दिखाई पड़ता है। समकालीन कविता ने ज्वार सतह पर कम, संवेदन और भावानुभूति के भीतरी स्तरों पर अधिक गतिशील हो जाता है। क्रोध, अक्रोश, विरोध, प्रतिरोध ये शब्द एक ही जाति के है किन्तु विक्षोभ में आन्तरिक अधिक अनुभूति होती है क्योंकि उसमें विपरीत और बैरी वर्ग या पद्धति के विरूद्ध अमर्ष की सघनता और अगाधता है। 'मोचीराम' कविता में मोचीराम कहता है-

"बाबूजी! इस पर पैसा
क्यों फूँकते हो ?
मैं कहना चाहता हूँ
मगर मेरी आवाज लड़खड़ा रही है

मैं महसूस करता हूँ – भीतर से

एक आवाज़ आती है – कैसे आदमी हो

अपनी जाति पर थूकते हो ।"[vi]

यहां विक्षुब्ध कवि जिसे दिन प्रतिदिन, क्षण प्रतिक्षण, स्थल स्थल पर केवल क्षोभ मिलता है। घर परिवार, कार्यालय, शिक्षा निकेतन, सत्ता के गलियारे, सेठ प्रबन्धक, प्रशासक, नेता आदि सम्पन्न व्यक्तियों के परिसर, निवास, निर्वाचित स्थल, संग्रह और वितरण के केन्द्र परिसंवाद के विवर कही भी सामान्य जन या कवि की कद्र नही है, कवि को प्रपंच और पशुता दिखती है पाखण्ड दिखता है। उसे लगता है वह किसी तिलिस्म में है जहां ऊपरी चकाचौंध, और भव्यता के भीतर भय और वीभत्सता है। 'मुनासिब काररवाई' नामक कविता में धूमिल लिखते हैं -

"वक्त बहुत कम है ।

इसलिए कविता पर बहस

शुरू करो

और शहर को अपनी ओर झुका लो

क्योंकि असली अपराधी का

नाम लेने के लिए

कविता, सिर्फ उतनी ही देर तक सुरक्षित है

जितनी देर, कीमा होने से पहले,

कसाई के ठीहे और तनी हुई गँड़ास के बीच

बोटी सुरक्षित है"[vii]

समकालीन कवि धूमिल की कविता में जनान्दोलना के संवेदनागत तीव्र संचरण और प्रबुद्ध चेतना से कविता की भाषा की अदा कथनभंगिमा और अंदाजे बयां स्वतः ही बदल जाता है। कवि नये-नये मुहावरे और जटील शब्दावली को अभिव्यक्ति के लिए व्यर्थ समझकर जनजीवन की मिलीजुली बोली बानी का अभिनव प्रयोग किया है। कथन भंगिमाओं के नए प्रकार सामान्य जनता के लहजों में मिलते हैं। समकालीन कविता वास्तविकता या यथास्थिति शीलता की प्रतीति को वेधकर पर्दे के अन्दर की असलियत को या तो उधाड़ती है या उधर संकेत करती है या प्रतीयमान मान्यता के पीछे छिपी हुई भयानकता और कुरूपता को उजागर करती है। धूमिल की कविता में प्रचलित मिथकीय मानसिकता को मरोड़कर कवि पौराणिकता का प्रगतिशील प्रयोग करता है। इनकी कविता में जो विक्षोभ दिखता है वह सतत गतिशील है स्थिति की जड़ता का नही । उसमें समूह मानस के रूठ झंझावत की कड़कड़हट और भाषा की भांज में तूफान की भुनभुनाहट सुनाई पड़ती है।

भाषा की सहजता को भी धूमिल की कविता की विशेषता के रूप में देखा जा सकता हैं । कवि की न केवल भाषा कुछ अधिक सहज हुई बल्कि उसकी रचना प्रक्रिया की जटिलता भी बहुत कम हुई है । धूमिल ने रचना प्रक्रिया के स्तर पर जटिलता को कम किया है। लोक के समीप और आम आदमी तक कविता को ले जाने के लिए स्थानीय भाषा और देशज बोलियों का प्रयोग अधिक से अधिक किया ।

REFERENCES

1. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य का इतिहास - डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, राजपाल एण्ड संज प्रकाशन,दिल्ली-110006, संस्करण-2009, पृ. 160
2. छायावादोत्तर काव्य-संग्रह–संपादक डॉ.रामनारायण शुक्ल,संजय बुक सेंटर, गोलघर, वाराणसी-221001,संस्करण-2011,पृ.143
3. साथ साथ – नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली -110002, पहला संस्करण 2012, पृ.58
4. आधुनिक काव्य संग्रह – संपादक रामवीर सिंह, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी-221001, संस्करण 2006, पृ.280
5. छायावादोत्तर काव्य-संग्रह–संपादक डॉ.रामनारायण शुक्ल,संजय बुक सेंटर, गोलघर, वाराणसी-221001,संस्करण-2011,पृ. 10
6. समकालीन कविता – संपादक डॉ. मालती तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी-221001, संस्करण 1999, पृ. 41
7. समकालीन कविता – संपादक डॉ. मालती तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी-221001, संस्करण 1999, पृ. 51